ग्रन्थमाला ‘धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र’ : देवालय – खण्ड २

देवालयमें देवताके प्रत्यक्ष दर्शन तथा तदुपरान्त के कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्री. निषाद श्याम देशमुख श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

कु. मधुरा भिकाजी भोसले एवं अन्य

सनातन संस्था

सनातनकी ग्रन्थसम्पदाकी अद्वितीयता !

सनातनके अधिकांश ग्रन्थोंमें प्रकाशित लगभग २० प्रतिशत भाग ‘सूक्ष्मसे प्राप्त दिव्य ज्ञान’ है एवं वह पृथ्वीपर उपलब्ध ज्ञानकी तुलनामें अनोखा है !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

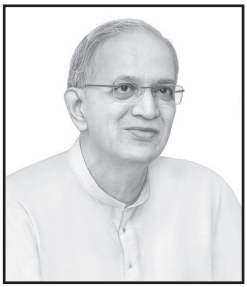

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला' के विषयमें मार्गदर्शन एवं संगीत, नृत्य आदि कलाओं के सात्त्विक प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी शोध

२. आचारपालनके कृत्य, धार्मिक कृत्य एवं बुद्धि-अगम्य घटनाओंका वैज्ञानिक उपकरणोंद्वारा शोध

३. शारीरिक एवं मानसिक तथा अनिष्ट शक्तियोंकी पीडाओंकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

४. ३.९.२०२३ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २२७ और अन्य ८९८ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

५. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओंमें हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

सनातनके सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंकी अद्वितीयता !

श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळ

श्रीमती प्रियांका सुयश गाडगीळ

सूक्ष्म ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधक पृथ्वीपर कहीं भी उपलब्ध नहीं, ऐसे अध्यात्मके विविध विषयों पर गहन अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करते हैं । वे कोई घटना, धार्मिक विधि, यज्ञ आदि का सूक्ष्म परीक्षण भी करते हैं । ईश्वरसे प्राप्त यह ज्ञान ग्रहण करनेके लिए उन्हें आसुरी शक्तियोंके आक्रमणोंका भी सामना करना पडता है । ऐसा होते हुए भी गुरुकृपाके बलपर वे यह सेवा करते ही हैं ।

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' इस चिन्हसे दर्शाए हैं ।)

१. देवालयमें दर्शन करनेकी उचित पद्धति (देवताके प्रत्यक्ष दर्शन अन्तर्गत आवश्यक कृत्य) १०

* देवताकी मूर्तिके दर्शन करते समय आवश्यक कृत्य १०

* देवता-दर्शनके उपरान्त आवश्यक कृत्य ११

२. देवताकी मूर्तिके प्रत्यक्ष दर्शन करना १५

* देवताकी मूर्ति एवं कच्छप की प्रतिमाके मध्यमें खडे होकर अथवा बैठकर दर्शन क्यों न करें ? १५

* देवताको नमस्कार करते समय पुरुष सिर न ढकें (सिरसे टोपी हटाएं); अपितु स्त्रियां सिर क्यों ढकें ? २४

३. देवालयके गर्भगृहमें प्रवेश निषिद्ध होनेका कारण २५

४. देवता–दर्शन उपरान्त आवश्यक कृत्य व उनका अध्यात्मशास्त्र २६

५. देवताकी परिक्रमा करना २७

* देवताकी परिक्रमा करनेकी सुविधा होना अथवा न होना २७
* परिक्रमा करनेका महत्त्व २७
* युगानुसार परिक्रमाके सन्दर्भमें हुआ परिवर्तन ३१
* परिक्रमाका भावार्थ ३२
* परिक्रमाकी पद्धति ३४
* देवताकी परिक्रमाकी संख्या ४२

६. देवालयमें दर्शन करनेपर दान करना ५३

६ अ. दान करनेका महत्त्व ५३

६ आ. देवताको अर्पित की जानेवाली वस्तु देवतापर न फेंककर उनके चरणोंमें अर्पित करना ५४

७. तीर्थ एवं प्रसाद ग्रहण करना तथा नामजप करना ५४

८. देवालयसे निकलते समय आवश्यक कृत्य एवं अध्यात्मशास्त्र ६४

* देवालयमें दर्शनके पश्चात वहांसे लौटनेके लिए मुडते समय देवताकी ओर तुरन्त पीठ न कर, पहले सात पग पीछे हटनेके उपरान्त मुडनेका कारण ६४

९. देवालयमें दर्शन करनेके विविध कृत्योंके कारण व्यष्टि एवं समष्टिपर क्या परिणाम होता है ? ६७

१०. देवालयका सूक्ष्म परीक्षण, इस सन्दर्भमें ईश्वरीय कृपास्वरूप प्राप्त ज्ञान एवं साधकोंको हुई अनुभूतियां ७०

११. दर्शनार्थियो, कालानुसार आवश्यक उपासना करो ! ७९

卐 'देवालयमें देवताके प्रत्यक्ष दर्शन तथा तदुपरान्त के कृत्योंका अध्यात्मशास्त्र', इस विषयमें अध्यात्मशास्त्रीय गहन ज्ञान ८३

भूमिका

भक्तिभावसे देवालयमें देवताके दर्शन किसी भी ढंगसे करें, भगवान की कृपाका अनुभव निश्चित होता है; परन्तु सर्वसाधारण व्यक्तिमें पर्याप्त मात्रामें भक्तिभाव नहीं होता; इसलिए उसे देवताके दर्शन अध्यात्मशास्त्रीय ढंगसे करना आवश्यक होता है । इस ग्रन्थमें केवल उचित पद्धति ही नहीं बताई गई है; अपितु उसका सूक्ष्म स्तरीय कारण भी बताया गया है । इससे उस पद्धतिके विषयमें अर्थात धर्मशास्त्रके प्रति श्रद्धा उत्पन्न होनेमें भी सहायता मिलती है । धार्मिक कृत्य श्रद्धापूर्वक करनेपर अधिक फल मिलता है । 'इस दृष्टिसे इस ग्रन्थसे सभी श्रद्धालुओंको अधिकाधिक लाभ हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**

'नामसंकीर्तनयोग' ग्रन्थमालाके सनातनके ग्रन्थ !

नामजप कौनसा करें ?

- जनसामान्यके लिए 'ॐ'का जप कठिन क्यों ?
- साधनाके आरंभमें कुलदेवताका नाम क्यों जपें ?
- गुरुद्वारा दिए गए नामजपका महत्त्व क्या है ?
- गुरु और सन्तों के नामका नामजप क्यों नहीं करना चाहिए ?

नामजप करनेकी पद्धतियां

- साधनाके आरम्भमें नामजप लिखनेका महत्त्व क्या है ?
- नामजप आरम्भ करनेसे पहले प्रार्थना करनेके क्या लाभ हैं ?
- नामजप गिननेके लिए कौनसी मणियोंकी मालाका उपयोग करें ?
- मनके विचार घटें और नामजपमें एकाग्रता बढे, इस हेतु क्या करें ?